2. अनोखा जादू का खेल

एक अध्यापिका की नई सोच, जिसने बच्चों को आनंद व उत्साह से भर दिया।

बताओ किसके पास क्या मिलेगा? चित्र देखकर मिलान कीजिए–

चिट्ठी　　काला कोट　　पुस्तक　　जादू की छड़ी

कक्षा में जादूगर के कपड़ों में, हाथ में छड़ी लिए अध्यापिका वंदना जी ने प्रवेश किया। उन्हें देखकर सभी बच्चे बहुत प्रसन्न हुए। अध्यापिका जी ने बात शुरू करते हुए कहा, "बच्चो! आज मैं तुम्हें, जादू का खेल दिखाऊँगी।" यह सुनकर सभी बच्चे बहुत खुश हुए, पर दरवाज़े के पीछे छिपे अमन के चेहरे पर उदासी थी।

कई दिन से अध्यापिका जी कक्षा में हुई चोरी की घटनाओं पर रोज़ पूछताछ कर रही थीं। कल तो उन्होंने अमन को निधि की पुस्तक अपने बस्ते में रखते हुए भी देखा था। फिर भी उन्होंने उसे कुछ नहीं कहा।

अमन यही सब सोचकर उनका सामना नहीं कर पा रहा था। तभी अध्यापिका जी ने उसकी ओर देखते हुए कहा, "अरे! अमन, तुम यहाँ दरवाज़े के पीछे क्या कर रहे हो?" अमन आनन-फ़ानन में चोरी किए गए सामान को दरवाज़े के पीछे छोड़ता हुआ बाहर निकला और डाँट पड़ने के डर से सिहर उठा।

तब अध्यापिका जी ने ज़ोर से कहा, "बोलो बच्चो, आबरा का डाबरा,गिली-गिली छू।" यह सुनकर सब बच्चे ताली बजाने लगे और जैसे ही अध्यापिका जी ने छड़ी घुमाकर कोट हिलाया, तो उसमें से बैटरी से चलने वाले चूहा, बिल्ली, कुत्ता, मोर, बंदर, तोता, खरगोश आदि अनेक खिलौने निकलकर कक्षा में दौड़ लगाने लगे।

यह देखकर सभी बच्चे तालियाँ बजाकर उछलने-कूदने लगे। अध्यापिका जी ने वे सभी खिलौने बच्चों में उपहार स्वरूप वितरित कर दिए, खिलौने पाकर सभी बच्चों ने अध्यापिका जी को धन्यवाद दिया।

"देखो! जादू का एक और खेल, जिससे तुम्हारी खोई हुई चीज़ें वापस आ जाएँगी।"

अध्यापिका जी की यह बात सुनकर सभी बच्चे आपस में खुसुर-फुसुर करने लगे। तभी पार्थ बोला, "अध्यापिका जी! क्या मेरा पेन भी जादू से वापस आ जाएगा?"

"मेरी नयी बोतल भी" रिया ने कहा। निधि बोली, "क्या जादू मेरी पुस्तक भी वापस ला सकता है?"

सभी बच्चे अपनी खोई हुई चीज़ों के बारे में अध्यापिका जी से पूछने लगे।

अध्यापिका जी छड़ी घुमाकर मुसकराते हुए बोली, "आबरा का डाबरा...गिली-गिली छू... निकल जा रिया की बोतल और पार्थ का पेन दरवाज़े के पीछे से।" जैसे ही उन्होंने दरवाज़े के पीछे से बोतल और पेन उठाकर दिया, सभी बच्चे ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाने लगे।

अब अध्यापिका जी ने कहा, "जादू! ओ जादू! निधि की पुस्तक को ले आ अमन के बस्ते में। छू...छू..."

यह सुनते ही सब बच्चे अमन के बस्ते की ओर देखने लगे। सिर झुकाकर अमन ने जैसे ही बस्ते से पुस्तक निकाली, कक्षा में तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी। तभी छुट्टी की घंटी बजी। सब बच्चे खुश होते हुए कक्षा से बाहर निकले पर अमन आँखों में आँसू लिए अध्यापिका जी के पास जाकर बोला, "आपने मुझे सबके सामने डाँटे बिना जो सबक सिखाया है, वह मैं हमेशा याद रखूँगा। मैं कसम खाता हूँ कि आज के बाद मैं कभी चोरी नहीं करूँगा।" यह सुनकर अध्यापिका जी ने अमन को गले से लगा लिया।